D.B. College - Jaynagar
Deptt of Political Science
B.A-III- Pub. Adminis-

Dr. A.K. Yadav
Asst Prof. G.P.T.T
Political Science

Date- 05-11-2020

Nov- Lecture- No - 06 And 07

वैज्ञानिक प्रबन्ध सिद्धांत की आलोचनाएं —

फ्रेडरिक टेलर की वैज्ञानिक प्रबन्ध की अवधारणा की आलोचना विभिन्न विद्वानो तथा विभिन्न श्रमिक संगठनो द्वारा की गई है। कुछ विद्वानो के अनुसार टेलरवाद उत्पादन के मशीनी पक्ष पर बल दिया है और मानवीय पक्ष की उपेक्षा करता है। उनके मत मे टेलरवाद का यह तर्क है कि उच्च मजदूरी श्रमिको को कार्य की प्रेरणा देती है। दरअसल मानव प्रेरणा के अर्थ की गलत व्याख्या करते है, व्यक्ति का सामाजिक वातावरण से पृथक अस्तित्व नही होता। इन विद्वानो के अनुसार संगठन में कार्यकुशलता तथा उत्पादन में वृद्धि की संरचनात्मक व्यवस्था की अपेक्षा कामगार का अपने कार्य एवं सहयोगियों के प्रति भावनात्मक दृष्टिकोण अधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत प्रत्येक श्रमिक मशीन का अंग बनकर रह जाता है। श्रमिको को मानवीय साधनवाद मे समझा जाता है तथा उत्पादन का साधन पद्धति। अतः मनोवैज्ञानिक इस बात पर बल देते है कि श्रमिको के साथ प्रबन्धक को मानवीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। श्रमिको को अपने कार्य के तरीके पर सोचने का अवसर देना चाहिए तथा प्रबन्ध मे सहभागिता का अवसर दिया जाना चाहिए।

वैज्ञानिक प्रबन्ध के सिद्धान्तों की आलोचना श्रमिको तथा उनके संघो द्वारा की गई है। इन लोगों के अनुसार वैज्ञानिक प्रबन्ध से श्रमिको के रोजगार के अवसर में कमी हो जाती है, क्योंकि इस व्यवस्था अन्तर्गत यद्यपि श्रमिक की कार्यकुशलता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। लेकिन इसके परिणामस्वरूप श्रमिकों की मांग कम हो जाती है तथा उन्हे बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ता है। कुछ विद्वानो द्वारा वैज्ञानिक प्रबन्ध सिद्धांत की आलोचना इस उद्देश्य से की गई है कि श्रमिकों द्वारा एक ही कार्य करते-करते उनमें अरुचि एवं नीरसता उत्पन्न होने लगती है, क्योंकि वैज्ञानिक प्रबन्ध की व्यवस्था में कर्मचारी को वही काम दिया जाता है, जिसमें वह दक्ष हो। वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत प्रत्येक कार्य की योजना, निर्देशन एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया प्रबन्धकों द्वारा तैयार की जाती है, जिसमें श्रमिकों की प्रेरणात्मक शक्ति समाप्त हो जाती है तथा श्रमिक केवल मशीन का एक अंग बनकर रह जाता है।

Scanned with CamScanner

वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत श्रमिकों की दशाएँ, कार्य का आवंटन एवं मजदूरी की अदायगी आदि शर्तों का निर्धारण वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर किया जाता है। इससे श्रम नेताओं का महत्व कम हो जाता है तथा भविष्य में श्रम संगठन भी कमजोर हो जाता है। श्रमिक संघ तथा उनके सामूहिक सौदेबाजी को कोई महत्व ही नहीं रहता है। उनसे नियोक्ता तथा प्रबन्धक कुछ भी विचार विमर्श नहीं करता। इसलिए श्रमिक संघ द्वारा वैज्ञानिक प्रबन्ध की व्यवस्था को अप्रजातांत्रिक माना गया है। इसी प्रकार कुछ प्रबन्धक तथा नियोक्ताओं द्वारा भी वैज्ञानिक प्रबन्ध की अवधारणा का विरोध किया गया है। उनका यह कहना है कि वैज्ञानिक प्रबन्ध की व्यवस्था में उन्हें कार्य योजनाओं को तैयार करने, समय एवं गति का अध्ययन करने, मशीनीकरण, श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण, मानवीकरण, निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण आदि का प्रबन्ध करने में इतना व्यय करना पड़ता है कि उनसे उन्हें अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद टेलर का वैज्ञानिक प्रबन्ध सिद्धान्त श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। दरअसल वैज्ञानिक प्रबन्ध की आलोचनाएँ, वैज्ञानिक प्रबन्ध की न होकर उस तरीके की हैं, जिसके माध्यम से उसे लागू किया जाता है। हाल ही कुछ वर्षों में व्यावहारिक वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए सुझावों को वैज्ञानिक के सिद्धान्तों में शामिल करके इन दोषों को दूर करने का प्रयास किया गया है। भौतिक विज्ञान में बढ़ती हुई उपलब्धियों के युग में टेलर निरपेक्ष प्रयोगों के माध्यम औद्योगिक समस्याओं के समाधान की आशा प्रदान की है तथा उन्होंने — संगठनात्मक कार्यकुशलता में वृद्धि का आधार प्रदान किया है। जैसे — Ernest Dedie ने टेलर के सिद्धान्त पर प्रकाश डालते हुए कहा है — " टेलर ने प्रबन्ध के विज्ञान को विकसित नहीं किया था। उसके विपरीत उसने प्रबन्ध के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया था। उसने यह विधियां बताई थी, जिनका प्रयोग कम्पनी के उत्पादन क्षेत्र में किया जा सकता है। वास्तव में फ्रेडरिक टेलर औद्योगिक इंजीनियरिंग का पिता था न कि वैज्ञानिक प्रबन्ध का।"

End.

Scanned with CamScanner